व्यंग्य

"नरकयात्रा"

(उपन्यास अंश)

–डॉ. ज्ञान चतुर्वेदी

स्वयं पर व्यंग्य करना बेहद कठिन है। बेहद निर्ममतापूर्ण साहस चाहिये। ईमानदारी भी। तटस्थता भी। डॉ. ज्ञान चतुर्वेदी ने 'नरकयात्रा' नामक व्यंग्य उपन्यास लिखते हुये यह सब निभाया है। मेडिकल कॉलेज के चिकित्सा जगत पर व्यंग्य की पैनी दृष्टि डालता हुआ उनका यह उपन्यास कई पुरुस्कारों से नवाज़ा जा चुका है और इस पर फिल्म बनाने की भी तैयारी है। इसी उपन्यास से दो दृश्य प्रस्तुत हैं। *–संपादक*

दृश्य - 1

डॉ. नामदेव के साथ डाक्टरों का एक झुंड चलता था। इन डाक्टरों का कोई नाम नहीं था। इनका अलग से कोई व्यक्तित्व नहीं था। ये जूनियर डाक्टर कहलाते थे। इनका कोई हक नहीं था, अपनी राय नहीं थी, अपनी डायग्नोसिस नहीं थी, अपनी जुबान नहीं थी। वे किसी भी तरह एम. एस. की परीक्षा पास करके डा. नामदेव से मुक्ति पाना चाहते थे। वे सभी डा. नामदेव से वह सीखने के लिए उनके साथ काम कर रहे थे, जो उन्होंने स्वयं ही अभी तक नहीं सीखा था। वे प्रोफसर की हाँ–में–हाँ मिलाने को अभिशप्त थे। मेडिकल साइंस को भी चापलूसी का आर्ट बना लिया था इन्होंने।

वे चौबीसों घंटे डा. नामदेव की हाँ–में–हाँ मिलाते थे। तथा एक दूसरे से बढ़कर हाँ–में–हाँ मिलाने की कोशिश करते थे। वे एक दूसरे से ज्यादा तेजी से सिर हिलाकर 'हाँ,' 'हाँ' कहने का प्रयत्न करते थे। वे एक दूसरे से ज्यादा तेजी से केसों की तारीफ करते थे। उनकी हालत बँधुआ मजदूरों से भी बुरी थी उनका अपना कुछ नहीं था। वे प्रोफेसर नामदेव के हाथों के खिलौने, कठपुतली आदि कहलाते, यदि वे किसी भावुक कथाकर के हत्थे चढ़ते। लाशघर के पास से ही वह सड़क आती थी, जो आइसोलेशन वार्ड की तरफ से निकलकर मुख्य अस्पताल तक पहुँचती थी। उसी सड़क पर इस समय डा. नामदेव अपने जूनियर डाक्टरों से घिरे चले आ रहे थे। वे कुछ कह रहे थे। तथा शेष लोग आगे

आ–आकर हाँ–में–हाँ मिला रहे थे। आगे आकर दूसरे से पहले हाँ कहने के चक्कर में जूनियर डाक्टर कई बार प्रो. नामदेव के पैरों तले आते–आते रह जाते या किसी गड्ढे में पैर दे डालते। बात करते हुए वे लाशघर की तरफ आ रहे थे।

"क्यों भाई, आपको क्या लगता है? क्या केस है यह?"

"सर मुझे तो वह सर....., जैसा आप कहें।"

"यह अपेंडिसरइटिस तो नहीं लगता।"

"हाँ सर वह अपेंडिसाइटिस तो नहीं है।"

"वैसे राइट आइलियक फोसा में दर्द तथा टेन्डरनेस होने के कारण अपेंडिसाइटिस भी हो सकता है।"

"हाँ सर अपेंडिसाइटिस भी हो सकता है।"

"पर यह अपेंडिसाइटिस है नहीं।"

"हाँ सर यह केस अपेंडिसाइटिस का नहीं है।"

"यह केस किसने रिफर किया था।"

"जी, डा. चौबे ने।"

"चौबे गधा है।"

"जी सर ।"

"यह केस अमीबिक लिवर तथा अमीबिक कोलाइटिस क्यों नहीं है?"

"हाँ सर यह तो वही लगता है।"

"वही है यह। इसका लीवर भी बढ़ा हुआ है।"

"हाँ सर वही है । लिवर बहुत बडा़ था उसका।"

"वेरी गुड, आपने लीवर देखा?

नहीं सर, मैंने तो नहीं देखा पर आप देख रहे थे, तब मैंने आपको देखते हुए देखा।"

"गुड ऐसे ही देखना चाहिए।"

"जी सर।"

"यह अमीबिक कोलाइटिस ही है।"

"हाँ सर, यह अमीबिक कोलाइटिस ही है।"

"वैसे अपेंडिसाइटिस भी हो सकता है ।"

"हो तो सकता है सर ।"

"पर अपुन मानेंगे नहीं ।"

"जी सर हम कभी नहीं मानेंगे ।"

"तुम क्या कहते हो ?"

"जी, आप जैसा कहें ।"

"यार है तो वह अपेंडिसाइटिस ही । अमीबिक लिवर तो बिलकुल नहीं है ।"

"हाँ सर लिवर तो बढ़ा है ही नहीं ।"

"उसे पक्का अपेंडिसाइटिस ही है ।"

"यस सर वह अपेंडिसाइटिस ही है ।"

"उसका ब्लडकाउन्ट भी बढ़ हुआ है ।"

"जी हाँ, ब्लडकाउन्ट भी बहुत था ।"

"वैसे रिपोर्ट गलत भी हो सकती है ।"

"जी सर आजकल रिपोर्टें बड़ी गड़बड़ आ रही है।"

"सब साले गधे हैं।"

"जी सर ।"

"फिर क्या करें ?"

"सर, जैसा आप कहें ।"

"यार, उसे अपनी तरफ ट्रांसफर कर लें। वह अपेंडिसाइटिस ही है। तुम में से कोई आपरेशन करना चाहता है?"

"जी मैं करूँगा।"

"ठीक है, उसे ट्रांसफर करके अपकी तरफ ले लो....। या छोड़ो....। कौन पचड़े में पड़े ।"

"जी हाँ रहने दें ।"

"फिर यह भी तो तय नहीं कि यह अपेंडिसाइटिस ही है ।"

"जी हाँ यह कैसे कह सकते हैं ?"

"बल्कि मुझे तो वह अमीबिक ही लगता है।"

"यस सर, यह अमीबिक ही है ।"

ऐसी ज्ञानवर्धक, रोचक, वैज्ञानिक विश्लेषण वाली तथा विवेचनात्मक गहराइयों तक ले जानेवाली बौद्धिक चर्चा करते हुए विद्वान डाक्टरों का दल चीरघर के पास पहुँच ही रहा था कि दूर से ही मृतक के रिश्तेदारों, पुलिस आदि की भीड़ देखकर प्रो. नामदेव रुक गये और पूछने लगे कि कौन मर गया ?

" पता नहीं सर'' एक जूनियर ने जवाब दिया।

" कहीं अपना वह प्रोस्टेट केस तो नहीं जिसमें हमने कैंची छोड़ दी थी?"

" जी वह तो परसों ही मर गया ।"

"या वह पेप्टिक अल्सर वाला जिसकी गेस्ट्रो जेजूनेस्टॉमी का आपरेशन करने के लिए पेट खोला था तो वहाँ अल्सर ही नहीं था ?"

"वह तो कल मर गया था?"

"या वह कि जिसका आपरेशन हमने कल रात किया था?"

"वह बच गया सर ।"

"फिर यह कौन मर गया। बिना हमारे आपरेशन के कौन मर गया?"

यह कहकर वे तेजी से हँसे। यह उनका मजाक था। सभी हँसे। एक दूसरे से बढ़ चढ़कर हँसे। हँसते हुए डाक्टरों का यह गिरोह जब चीरघर के पास से गुजरा तो हवलदार बलभद्रजी ने सावधान की कड़क मुद्रा इख्तियार करके डा. नामदेव को जोरदार सैल्यूट किया। जिसे हवलदार बलभद्रजी जैसा स्वार्थी, कमीना तथा चालाक आदमी भी सलाम कर रहा है वह निश्चित ही कोई बड़ी हस्ती होगी, यह मानकर सिपाही ने भी बीड़ी फेंककर सलाम किया और मृतक के रिश्तेदारों ने भी खड़े होकर सम्मान दिया। डा. नामदेव का दल चीरघर के पास से गुजरकर अस्पताल की ओर निकल गया । सलाम करने के

बाद, दूर जाते डाक्टरों को देखते हुए सिपाही ने हवलदार बलभद्र की तरफ प्रश्नवाचक निगाहों से देखा, तो बलभद्र ने पूछा, "जानते हो उन्हें ?"

"नहीं, हुजूर।"

"बड़े अच्छे सर्जन हैं ये। बढ़िया आपरेशन करते हैं। हमारी दूसरी शादी मान लो कि इन्होंने ही कराई थी । ये न होते तो हम आज तक उसी बुढ़िया से फँसे रहते।"

"कैसे ?"

"वो ऐसे कि हमारी पहली औरत का आपरेशन इन्होंने ही किया था । दो दिन भी नहीं चली आपरेशन के बाद ।"

दृश्य - 2

चार विद्वान मिलकर चाय पियें, सप्रेम बैठकर अनुपस्थित पाँचवें विद्वान की निंदा करें, आपस में मजाक करें, विषय को छोड़कर हर विषय पर चर्चा करें तो सरकारी टी.ए., डी.ए. से लेकर समाचारपत्रों तथा शोधपत्रों तक के लिए लगभग सेमीनार हो जाता है। चार लोग मिलकर, किलोल करते हुए, भरे पेट से डकार लेते, विदेश–प्रवास की सुखद स्मृतियों का दु:खद रोना रोते, यह साला क्या बोले चला जा रहा है–इस बात पर आश्चर्य प्रकट किए बिना, मुँह बाए बैठकर, आँय–बाँय सब सुनते हुए जो खेल करते है, उसे सेमीनार कहते हैं। सेमीनार किसी भी इनडोर खेल –जैसी चीज है, जैसे ताश खेलना, चौपड़ सजाना या तीन–पत्ती खेलना । सेमीनार और तीन पत्ती के खेल में अंतर यही है कि सेमीनार को आप बिना ताश के पत्तों के भी खेल सकते हैं।

वैसे डाक्टरों का सेमीनार थोड़ा–सा अलग किस्म का खेल होता है। डाक्टरों के बड़े–बड़े सेमीनार तथा सम्मेलनों की तो खैर बात तथा ठाठ ही दूसरे हैं। हम यहाँ उसकी बात नहीं कर रहे । हम तो उनके एक छोटे–से खेल की चर्चा कर रहे हैं, जो चार डाक्टर मिलकर कहीं भी खेल लेते हैं, कभी भी खेल लेते हैं और प्रायः खेलते रहते हैं। इसे भी वे सेमीनार ही कहते हैं या केस प्रेजेंटेशन या केस डिसकशन या क्लीनिकल–मीटिंग। घरेलू खेल है यह। अष्टा–चंगा पै, या चोर–सिपाही या हूलगदागद या छुपा–छुपौवल या घोड़ा–बादामशाही टाइप का। एकदम ऐसा घरेलू खेला जिसमें किसी भी तामझाम की आवश्यकता नहीं होती, पर मजा पूरा आता है। डाक्टरों द्वारा खेल जाने वाले इस सेमीनार या क्लीनिकल–मीटिंग में किसी बीमारी को पहले फींचा जाता है, फिर बहस के पत्थर पर उसे पटक–पटककर बीच–बीच में मजाक के पानी के छींटे दिये जाते हैं और अंत में निष्कर्ष की टूटी अलगनी पर वापस वैसा ही टाँग दिया जाता है।

वार्ड में जो मरीज ठीक नहीं हो रहा हो, समझ में नहीं आता हो, उसका सबसे शर्तिया इलाज चिकित्सा विज्ञान ने यह निकाला है कि इस केस पर एक क्लीनिकल–मीटिंग कर ली जाए। "यार, इसे इस बार की क्लीनिकल–मीटिंग मे रख लो,"या इस बार का सेमीनार इस बदमाश पर रख लो"–यह निर्णय राउंड लेते डाक्टर लेते रहते हैं। "साहब, यह मर्ज़ ठीक ही नहीं हो रहा।" या "सर, मेरी हालत तो दिनोंदिन

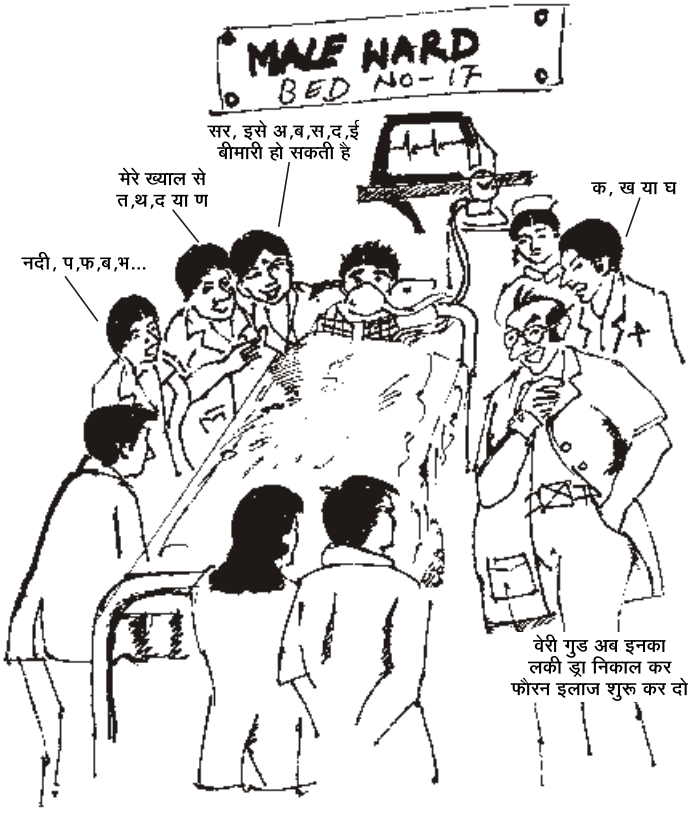

और खराब होती जा रही है" के जवाब में डाक्टर यही कहता है कि तुम चिंता मत करो। वह दिन दूर नहीं, जब तुम पर हम एक सेमीनार करेंगे, जिसमें सभी डाक्टर मिलकर बात करेंगे कि तुम्हें क्या है?

इससे फायदा यह होता है कि एक ही डाक्टर रोज–रोज की चिंता करने के झंझट से मुक्त हो जाता है। एक दिन सभी डाक्टर मरीज को लेकर बैठते है और चिंता करते हैं कि इस पट्ठे को आखिर है क्या? प्रायः वे इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि इसे या तो 'अ' बीमारी है या 'ब' फिर 'स', 'द', 'र' 'ल' व। कुछ लोगों का यह भी मत रहता है कि क्यों नहीं इसे 'प', 'फ', 'ब', 'भ', 'म'–जैसी कोई बीमारी है क्योंकि इन बीमारियों में भी तो मरीज बेहोश हो जाता है, उसे झटका आता है और आँखों से एक के बजाय दो दिखने लगते हैं। तब एकाध डाक्टर यह भी विचार प्रकट कर सकता है कि यह केस 'क', ख', या फिर 'ग', 'घ', या निश्चित ही 'ण' से पीड़ित है क्योंकि उसको भी यह सब हो सकता है। तब 'प', 'फ' वाला कहता है या कह सकता है कि 'क', 'ख', 'ग', 'घ', में एक के दो नहीं दिखते है, अतः यह केस 'क', 'ख', नहीं हो सकता। तब 'क', 'ख', का हिमायती डाक्टर बताता है कि फलाँ जर्नल में, जिसका नाम तथा अंक उसे याद नहीं है, पर उसे यह पक्का याद है कि उसमें 'क, 'ख', 'ग', 'घ', में भी एक के दो दिखने का सन्दर्भ दिया गया था और जहाँ तक इस मरीज का प्रश्न है, हो सकता है कि यह दो के ही दो देख रहा हो और सोचता हो कि वह एक के दो देख रहा है। इस तरह इस मरीज को दो को एक समझने की बीमारी है, जो 'क', 'ख', 'घ', में होता है, जबकि 'प', 'फ', 'ब', 'भ', में नहीं होता।

तब अभी तक ऊँघ रहा कोई डाक्टर यह बताता है कि ऐसा न 'क', ख', 'ग', में लिखा है, न ही 'प', 'फ', 'ब', 'भ', में। तब सभी डाक्टरों में काँय–काँय होने लगती है कि फलानी किताब में ऐसा है तथा फलानी में ऐसा नहीं है। मरीज की छाती पर मोटी मोटी किताबें खोलकर तथा मरीज की छाती पर ही मोटे मोटे घूँसे पटककर वे क्लीनिकल डिसकशन का खेल खेलते रहते हैं। अंत में वे खेल खत्म करके यह कहते हुए अपने अपने घर पत्नियों से डाँट खाने निकल जाते हैं कि इस मरीज को अवश्य 'अ', 'आ', 'इ', 'ई', 'क', 'ख', 'ग', 'घ', 'प', 'फ', 'ब', 'भ', 'य', रल व या 'क्षा', 'त्र', 'ज्ञ', में से कोई बीमारी है, जिसके लिए इसे 'ए', 'ऐ', 'ओ', 'औ', 'त', 'थ', 'द', 'ध', 'अं', 'अः', या 'उ', 'ऊ',में से कोई इलाज दिया जा सकता है, जो शायद असर करे या शायद न भी करे। वैसे और कनफर्म करने के लिए कि इसे क्या बीमारी है, हम चाहें तो 'क', 'का', 'कि', 'की', 'कु', 'कू', 'के', 'कै', या 'प', 'पा', 'पि, 'पी', 'पे', 'पै', 'पो', 'पौ', जैसी कई नवीनतम जाँचे भी करा सकते हैं। और उसके बाद 'ए', 'ऐ', आदि का इलाज शुरू कर सकते हैं, जो बहुत अच्छा काम करता है, या कभी कभी बिल्कुल ही नहीं करता। इस प्रकार इस अस्पताल में भी सेमीनार द्वारा समस्त लाइलाज कठिन रोगों का इलाज होता था।

ऐसी गौरवशाली पृष्ठभूमि में आज की क्लीनिंग मीटिंग बस शुरू ही होने को थी । शर्माजी अपने मजबूत कंधों पर सेमीनार की निरर्थक बहस का बोझ तथा सार्थक बातों की लाश उठाने को तैयार खड़े थे। वे ही हकीम साहब का केस समस्त जूनियर डाक्टरों तथा मेडिकल डिपार्टमेंट के विशेषज्ञ डाक्टरों के समक्ष प्रस्तुत करने वाले थे, पर उनका यह आइटम विशष तौर पर जिस विशिष्ट दर्शक के लिए पेश किया जा रहा था, वे एच.ओ.डी. डॉ.चौबे थे, जो आ गए थे तथा आते ही कुर्सी पर ऊँघने लगे थे। सारे जूनियर डाक्टर पीछे की सीटों पर स्कूली बच्चों से सहमे तथा चुपचाप बैठे थे। वे ऐसे सहमे तथा चुपचाप डा.चौबे के कारण तथा उनको दिखाने के लिए थे। समस्त विशेषज्ञ डाक्टर भी चुपचाप बैठे थे। सभी पर डा. चौबे का भय व्याप्त थे। सेमीनार तथा केस डिसकशन में वे किसी की भी पगड़ी उछाल सकते थे। डा. चौबे किसी से भी, कुछ भी पूछ सकते थे तथा किसी के भी द्वारा उठाए गए सही मुद्दे तथा टिप्पणी को घटिया, गलत तथा हठधर्मीपूर्ण बात से काट सकते थे। किसी की हिम्मत नहीं थी कि उनकी अपनी व्यक्तिगत एकेडेमिक राय पर, जो किसी भी किताब में नहीं मिलती थी, अपनी राय दे सके। सभी से हाँ–हाँ, सही बात है या ही–ही ही करते बनती थी। जो राय डा. चौबे की मरीज की बीमारी के विषय में होती थी वही अंततः सबकी होती थी। इसके सिवाय कुछ भी सोचना, बोलना, फुसफुसाना या कहना नादानी , दुस्साहस तथा बदतमीजी माना जाता था। यह मजबूरी थी। जिससे चौबेजी चाहें उसके अलावा मरीज अपनी या अन्य किसी डाक्टर की बीमारी से नहीं मर सकता था।

– डॉ. ज्ञान चतुर्वेदी
(कार्टूनिस्ट–डॉ. अपूर्व त्रिपाठी)